दूसरा – अध्याय

२. हिन्दी कहानी में नारी चित्रण

* कहानी कला की विशेषता -

प्रतिदिन तेजी से बदलते हुए समाज के व्यक्ति और परिवेश की अभिव्यक्ति के लिए कहानी का माध्यम उपन्यास की अपेक्षा अधिक बेहतर है। जीवन - गति की तीव्रता ने आन्तरिक मन को बदला भी है और उलझा भी दिया है। जीवन - संक्रमण में घटित होती हुई अनेक घटनाओंको चित्रित करने में आज की कहानी अप्रत्याशित रूप से सफल हो रही है। हमारे समाज में आज भी सम्बन्धों को भावुकता और भावनात्मक स्तर पर जोड़ा जाता है - वैचारिक और आवश्यकता के स्तर पर नहीं। हिन्दी कहानी ने इस जमीन को तोडा है और आज की कहानियों में अनेक ऐसे नारी पात्रों का चित्रण मिलता है जो अतीत के आदर्शों को व्यर्थ समझती है वर्तमान ही उनका अपना है। समाज से कटकर नारी अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है।

* नारी की स्थिति -

मानव जाति का आधा हिस्सा नारी सदा से पीडित, शोषित रहा है। प्राचनी काल से नारी शोषित रही है। उसके विकास को समाज और परिवार ने धर्म, रूढि तथा शारीरिक कमजोरी के कारण रोका है और दुर्बल तथा पुरूष की दासी बनाकर पेश किया है।

आदिकालमें -

आदिकाल में नारी स्वतंत्र थी। उस काल में मातृसत्ताक पध्दति होने के कारण नारी के हाथ में ही बहुतसारे अधिकार थे। किन्तु जैसे - जैसे समाज का विस्तार हो गया वैसे - वैसे नारी का महत्त्व कम हो गया और साथ - ही - साथ पुरूष नारी पर अपना अधिकार जमाने लगा। "निशा " "दिवा," "अमृताश्व" आदि कहानियोंमें नारी की स्वतंत्रता तथा समानता का चित्र प्राप्त होता है।[१]

**** सामंतवादी युग में -**

सामन्ती समाज - व्यवस्था में नारी की स्थिति अत्यंत शोचनीय हो गयी। मुगल काल में शासकों की विलासिता और भी बढ़ गयी। इस युग की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि बादशाह लोग युध्द पर जाते समय अपनी पत्नियों को भी साथ ले जाते थे। इस प्रकार इस युग में नारी एक भौतिक वस्तु बन गई अर्थात् उसकी ओर सिर्फ भोग की दृष्टि से देखा जाने लगा। मुगलों की वासना दृष्टि से बचने के लिए उसे पर्दे में रहना पड़ा। परिणामत: वह पढ़-लिख नहीं सकी।

यशपाल की "चक्कर का किला" बेनीपुरी की "मालिनी के तट पर", "सीता, और द्रौपदी" शिवप्रसाद सिंह की "आरपार की माला," "उपहार" आदि रचनाओं में नारी पर किए जानेवाले सामन्तयुगीन अत्याचारों एवं नारी के असफल विद्रोह के विविध चित्र प्राप्त होते हैं। इस युगमें नारी पुरुष की भोगवस्तु मानी गई।[२]

अंग्रेजी शासन -

मुगलकाल की अराजकतापूर्ण परिस्थितियों से ब्रिटेन ने लाभ उठाया और अपना शासन जमाया। अंग्रेजी शासन के सम्पर्क से देश में जागृति और चेतना की लहर दौड़ आयी। भारतीय समाज अपने बंधनों से बाहर निकलने का प्रयास करने लगा। भारत में इन्हीं दिनों सुधारवाद की भावना ने जोर पकड़ा। तबतक नारी से सम्बन्धित अनेक समस्यायें उभरकर आयी थीं, जैसे बालविवाह, सतीप्रथा, पर्दा - पध्दति, अनमिल - विवाह, प्रेम और उससे सम्बन्धित जाति की समस्या आदि।

सुधारवादी आन्दोलन ने जोर पकड़ा और नारी की स्थिति में परिवर्तन करने की माँग बढ़ने लगी। आरम्भिक काल [१९३[illegible]-३२] की सभी कहानियोंमें नारी अपने अधिकारों के लिए झगड़ने का प्रयास तो अवश्यक कर रही थी किन्तु उस समय की कहानी में नारी की पूर्ण स्वतंत्रता को कम ही महत्व दिया गया था। वह एक ओर विद्रोही रुप धारण तो कर रही थी किंतु उसके साथ ही पारम्पारिक संस्कारों को पूरी तरह छोड़ नहीं सकती थी।

प्रेमचन्द की आरम्भिक कहानियों में नारी का वही आदर्श और मर्यादावादी रूप दिखाई देता है। प्रेमचन्द तथा उनके समकालीन अन्य कहानीकारों ने बाल - विवाह, विधवा - विवाह, दहेज-प्रथा, वेश्यावृत्ति अनमेल - विवाह, पुनर्विवाह, संयुक्त परिवार प्रथा की समस्या ि आदि अनेक समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार करते हुए ऐसे सजीव चित्र प्रस्तुतं किए है कि जिनके कारण नारी, पाठक की सहानुभूति तो अवश्य प्राप्त कर लेती है किन्तु इस नारी की समस्याओं का समाधान करते वक्त वे कहानीकार आदर्शवादी बन जाते हैं। उदाहरण के लिए प्रेमचंद की "बड़े घर की बेटी", "स्वामिनी", "झाँकी" आदि कहानियों को लिया जा सकता है।

प्रेमचन्द - परवर्ती कहानियों में नारी को परम्परा एवं आदर्श से ल अलग करके उसे पूर्णत: यथार्थ वादी दृष्टि से प्रस्तुतत करने का प्रयत्न किया गया है॥ यशपाल, रांगेय राघव, अमृतराय, बेनीपुरी आदि कहानीकार इसमें प्रमुख माने जाते हैं। इन लेखि लेखकों ने नारी की प्रमुख और महत्वपूर्ण समस्याओं का चित्रण अत्यंत मार्मिक दृष्टि से ि किया है जिनमें उन्होंने नारी से सम्बान्धित प्रमुख समस्याउ में परित्यक्ता नारी, आर्थिक - कमजोरी, अनमेल विवाह की समस्या विधवा,- विवाह, वेश्या नारी का चित्रण, मातृत्व से संबंधित समस्याओं का चित्रण संस्कारों में बध्द नारी आदि समस्याओं का चित्रण प्रमुख रूप से किया है।

** परित्यक्ता -

परित्यक्ता नारी की समस्या एक ज्वलंत समस्या है। नारी की पारिवारिक निर्धनता, आश्रयहीन अवस्था, पुरुष जाति की सन्देह वृत्ति, नारी का पूर्व प्रेम, पति के घर द्वारे जानेवाले अत्याचार सर्व समाज की मान्ताओं आदि कारणों से स्त्री को पति का घर छोड़ना पड़ता है॥ परिणामत: उसे समाज में कोई स्थान नहीं मिलता। उसे हमेशा हीन दृष्टि से देखा जाता है। वह अन्दर ही अन्दर घुटती रहती है। समाज की इसी व्यवस्था के कारण ही नारी को हमेशा पुरुष के अत्याचारों को सहते रहना पड़ा है।

यशपाल की "मंगला" कहानी परित्यक्ता, आश्रयहीन नारी की दुर्दशा का करुण चित्र प्रस्तुत करती है। ओंकारनाथ श्रीवास्तव की "काल सुन्दरी" कहानी ऐसी ही एक परित्यक्ता और प्रेम की भूखी नारी की व्यथा की कहानी है। कमलेश्वर की "एक अश्लील कहानी" नारी की परवशता, व्यथा एवं पुरुष वर्ग की कठोरता को स्पष्ट करती हैं।[3]

** अनमेल - विवाह -

हिन्दी कहानीकारों ने नारी-जीवन के विवाह की समस्याओं को विविध रूपों में चित्रित किया है। उनमें से अनमेल - विवाह एक प्रमुख समस्या है। अनमेल विवाह का प्रमुख कारण है पुरुष की वासनामयी दृष्टि। एक ओर नारी संस्कारों से जुड़ी हुई है तो दूसरी ओर परिवार की आर्थिक कमजोरी के कारण वह अनिच्छा से ही अनमेल - विवाह करने के लिए बाध्य होती है। अत: जब वह अपने बूढ़े या अधेड़ पति से वैवाहिक सुख नहीं पा सकती है तब किसी दूसरे मार्ग का अवलंब करती है। इसप्रकार नीति के बन्धन और सामाजिक विकास की स्वच्छता का भार नारी को सौंप दिया है और पुरुष उच्छृंखल जीवन बिताने के लिए मुक्त हो गया है।

मार्कण्डेय की "बिन्दी", "सात बच्चों की माँ", पहाडी की "राजारानी", शम्भुप्रसाद साह की "भाभी" सत्येन्द्र शरद की "वह रात" इलाचन्द्र जोशी की "चौथे विवाह की पत्नी" आदि कहानियों में स्त्री के अनमेल - विवाह की समस्या और उसके दुष्परिणामों को चित्रित किया है।[4]

** विधवा समस्या -

भारतीय पुरुष - प्रधान समाज की यह विडंबना हैं कि पुरुष पत्नी की मृत्यु के बाद बुढ़ापे में भी विवाह रचा सकता है किन्तु वह अधिकार स्त्री को कदापि नहीं। पुरुष - पत्नी के जीवित रहने पर भी दूसरी स्त्री से विवाह कर सकता है।

वैधव्य, नारी का सबसे बड़ा कलंक है। समाज के संस्कार, धर्म, रूढ़ि आदियों के कारण विधवा को मानसिक अंतर्द्वन्द्वा का सामना करना पड़ता है। उसे परिवार से तो पूरी तरह घृणा प्राप्त होती ही है, साथ ही साथ समाज भी उसे वासना की दृष्टिसे देखने का प्रयत्न करता है। इस तरह जीवन में उसे कोई रस नहीं दिखाई देता। वह अपनी इच्छाओं को किसीके सामने प्रकट नहीं कर सकती। समाज उसे अस्तित्वहीन बना देता है॥ वह परिवार में एक दासी के रूप में रहती है किंतु उसे कोई साधारण अधिकार भी प्राप्त नहीं होते। अमृतराय की कहानी "लोग" में विधवा पार्वती का मार्मिक चित्रण किया गया है। अमृतराय लिखते है "किसी को लांछित करने में समाज को रस आता है और लाछंन की पात्री सुन्दरी विधवा हो तब तो फिर क्या पुछना - - - - - - हमारे समाज में लाछंन का सदाव्रत खुला रहता है।"[५]

** वेश्या नारी -

स्त्री के वेश्या बनने के अनेक कारण है॥ जैसे, घर की आर्थिक कमजोरी के कारण, पति से बिछुड़ने के कारण, समाज में प्रचलित रूढ़ि परम्परा के अनुसार, जीने के रास्ते बन्द होने के कारण अनिच्छा से ही नारी को अपना शरीर बेचना पड़ता है।

अर्थ के अभाव में उसे जिन अनर्थों के लिए मजबूर होना पड़ा है, उसके इतिहास के वे काले पृष्ठ अपने मुंह को कभी भी उज्ज्वल नहीं होने देंगे। महादेवीजी के मतानुसार हमारे समजा ने कुष्ठ रोगियों के लिए भी आश्रम बनाये, विक्षिप्तों के लिए चिकित्सालये का भी प्रबन्ध किया, परन्तु इनके कल्याण का कोई मार्ग नहीं ढूंढ़ा। उसे मूक भाव से युग - युगान्तर तक इस दण्ड का [जिसे पाने के लिए उसने कोई अपराध नहीं किया।] भोग करते हुए समाज के उच्छृंखल व्यक्तियों की सीमातीत विलास - वासना का बांध बनकर जीवित रहना पड़ता है। उसके लिए कोई दूसरी गति नहीं, कोई दूसरा मार्ग नही और कोई दूसरा अवलम्ब नहीं। वह ऐसी ढालू राह पर निरवलम्ब छोड़ दी जाती है, जहाँ से नीचे जाने के अतिरिक्त और कोई उपाय ही नहीं रहता।[६]

यशपाल की, "कोकला डकैत" "एक सिगरेट", "आबरू", बेनीपुरी की "वेश्या बनाम सती" यशपाल की "उपदेश", "दुखी - सुखी,"शिवप्रसाद सिंह की "हाथ का दाग", भगवती प्रसाद वाजपेयी की "सत्य का पाप" आदि कहानियों में वेश्या नारी का अंत्यत मार्मिकता से चित्रण हुआ है॥[७]

** मातृत्व समस्या -

हिन्दी कहानी में नारी की मातृत्व समस्या को भी प्रमुख रूप से चित्रित किया गया है। नारी हमेशा मातृत्व की भूखी रहती है॥ वह अपनी संतान प्राप्ति की इच्छा के कारण ही पुरुष अर्थात पति के घर सभी लोगों से उपेक्षित रहकर भी सब कुछ सहती है। जहाँ एक ओर वह माता बनकर अपने आपको भाग्यशाली और गौरवशाली मानती है, वहीं दूसरी ओर वह माता बनकर और अनेक समस्याओं, व्यथाओं का कारण बनती है। अपनी सन्तान के रूप में वह अपना बीता बचपन, अपनी इच्छाएँ देखना चाहती है॥ संन्तान के लिए वह चोरी तक करने के लिए तैयार होती है। यशपाल की "धुनीया की होली", शिवप्रसाद सिंह की "गंगा तुलसी" आदि कहानियाँ इसके सच्चा प्रमाण है।

हिन्दी कहानीकारों ने मातृत्व की गरिमा उसकी पीड़ा को आरम्भिक अवस्थाओं में चित्रित किया है तो दूसरी ओर नए कहानीकारो ने उसकी अतृप्ति और अभाव की पीड़ा को मार्मिकता से चित्रित किया है। प्रेमचन्द के समय के कहानीकारों ने माँ के पारंम्पारिक आदर्शों का चित्रण किया है तो नए कहानीकारों ने अभावग्रस्त नारी की व्यथा, पीड़ा और कृत्रिम मार्गों के स्वीकार को अभिव्यक्त किया है। यहाँ आकर लेखक अधिक नि:संग बन सके है तथा इन चित्रों द्वारा नारी की मौन - व्यथा को चित्रित करना उनका प्रमुख उद्देश्य लगता है।

उपर्युक्त सभी समस्याओं का प्रमुख कारण यह है कि नारी प्राचीन काल से ही धर्म, रूढ़ि, परम्परा आदि में बध्द है। भारतीय समाजव्यवस्था का ही यह एक भीषण परिणाम है॥ जाति - व्यवस्था धर्म, संस्कार, पुरुष का अहं, पुरुष की एकाधिकार की दृष्टि आदि के कारण नारी - जीवन हमेशा दु:खो, पीड़ाओ, व्यथाओं, बन्धनों एवं घुटन की एक लम्बी कहानी बन गया है॥

**आधुनिक - काल -

आज की कहानियों में नारी के बदलते रूप का चित्रण मिलता है। आधुनिक काल की नारी प्राचीन समाजव्यवस्था को बदलने का प्रयत्न कर रही है। वह अपने अत्याचारों को समझ रही है और काफी हदतक उसका विरोध करने का प्रयत्न रही है। और आज का कहानीकार नारी के इस बदलते रूप को ही चित्रित कर रहा है॥ आज के युग की नारी घर की चार दिवारी से बाहर आ गयी है। वह शिक्षा के कारण अपने अधिकारों को और अपने कर्तव्यों को भी पूरी तरह समझने की कोशिश कर रही है॥ समाज के थोथे बन्धनों और रीति - रिवाजों से वह अपनी जिन्दगी बरबाद नहीं करना चाहती। इतना ही नहीं, वह अपने अधिकार की प्राप्ति के लिए अपने पैरो पर खड़ी होकर, समाज से कटकर आत्मनिर्भशित भी हुई है॥ वह अपनी जीवनगत आवश्कताओं की पूर्ति के लिए माँ - पिता, पति या पुत्र पर भी निर्भर रहना स्वाभिमान के विरुद्द समझती है॥

वह कठोर और अत्याचारी पति के विरोध में आवाज उठा रही है। राजेन्द्र यादव की "नीराञ्जना" ओमप्रकाश श्रीवास्तव की, "चौदह कोसी पंचायत" आदि कहानियों मे नारी के सामाजिक संघर्ष के चित्रों को उभारा गया है॥ इस विषय पर ही लिखी गयी कहानी में मन्नू भण्डारी की"दो कलाकार" में इसका चित्रण प्राप्त होता है। प्रेमचन्दकालीन नारी पात्र जहाँ पति और प्रेमी के बीच शरीर और आत्मा को बांटकर अपने आप में घुटती रहती थी वहाँ दूसरी ओर आधुनिक काल में चित्रित मन्नू भण्डारी की कहानी "ऊँचाई" में शिवानी समकालीन नारी की परिवर्तित और विकसित मानसिकता को रेखांकित करती है।[८]

आधुनिक कहानियों में चित्रित नारी - चित्रण में एक ओर शिक्षा और उससे प्राप्त आर्थिक स्वावलंबन के साथ ही उसके दुष्परिणाम और उससे प्राप्त समस्याओं का भी चित्रण हुआ है॥ जैसे आज की कार्यशील नारी मानसिक आवश्यकताओं को उसके माँ - बाप, सास - ससुर तो समझ नहीं पाते और साथ ही उसे पति भी समझ नहीं सकता॥ प्रगति के नाम पर नारी जितना ही अपने को स्वतंत्र या आधुनिक घोषित कर रही हो, किंतु दूसरी ओर जीवन

में संघर्ष भी उतने ही विषम, व्यापक और तीव्र बनते जा रहे हैं।

विवाहित नारी अगर नोकरी करती है तो ससुरालवाले उसे नोकरी करने की इजाजत देकर मानो उसपर बड़ा अहसान कर रहे हैं और उसपर अपना अधिकार जमाना चाहते है। मोहन राकेश की "सुहागिनें"ऐसी ही कहानी है।

इसके साथ ही आधुनिक कहानी में नारी अपने विवाह के बारे में भी किसीका दबाव पसंद नहीं करना चाहती। वह विवाह के लिए योग्य जीवनसाथी का चुनाव करना चाहती है। सोमा वीरा की "संघर्ष" और "ढहती कगारें"में भावी पति के चुनाव संबंधी निर्णय स्वयं नारी ही लेती है। जहाँ कहीं दया अथवा उपकार की भावना वह देखती है वहाँ "प्रणय - चिह्न" अंगूठी को भी फेंक देती है। सोमा वीरा की उक्त कहानियों के अतिरिक्त विष्णु प्रभाकर की "राखी" उषादेवी मित्रा की "गोधूली" सेंगर की "टूटी लकीर" आदि में भी नारी के विद्रोहिणी रूप को पाया जा सकता है।[१]

उपर्युक्त विवेचन से यह दिखाई देता है कि प्रारंभिक काल और आधुनिक काल की कहानियों में नारी - चित्रण में काफी बदलाव आ चुका है। आधुनिक काल की नारी जितना स्वतंत्र होने का कष्ट उठा रही है, उतनी ही अनेक समस्याओं में घिरी जा रही है। किन्तु आधुनिक कहानीकारों ने कही - कही उन समस्याओं के कारणों को सिर्फ चित्रित किया है तो कहीं उन समस्याओं का कुछ मात्रा तक समाधान करने का प्रयास किया है।

** महिला कहानीकार -

अब नारी स्वतंत्रा का रूप बदल गया है। पिछले दो दशकों में वह परिवर्तन अधिक तेजी से हुए हैं। इसकी झलक महिला कहानीकारों की कहानियों में स्पष्ट दिखाई देती है। महिलाओं में समानाधिकार की भावना अधिक बलवती हुई है ।

स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी कहानी में नारी के कुछ ऐसे पक्ष उभरे हैं जो पहले की कहानियों मे देखने को नहीं मिलते। इन नये पक्षों को उभारने में कथालेखिकाएँ पुरुष लेखकों से किसी भी तरह f पीछे नहीं हैं। उन्होंने पुरी इमानदारी और निर्भीकता से सामाजिकता के चालू मुहावरे से हटकर नारी के परबर्तित सच को सामने लाने का प्रयास किया। नारी का यह नया रूप, जो कहानियों मे निरूपति हुआ है, लेखक लेखिकाओं की कल्पना की उपज मात्र नहीं प्रत्युत सामाजिक परिवर्तन का ही परिणाम है।

शिक्षा और नोकरी के कारण नारी घर के सीमित वातावरण से निकलकर बाहर खुले में आयी है। परिवर्तित परिस्थितियों और परिवेश में नारी की शरीरगत पवित्रता की धारणा को आघात पहुँचा है। समानता और स्वावलंबन की, शाब्दिक सच्चाईयाँ जब व्यावहारिक जीवन में उतरी तो उससे कभी नयी - नयी समस्याओं का सामने आना स्वाभाविक था ॥ प्रारंभिक दौर में नयी परिस्थितियों और पुराने संस्कारों के बीच संघर्ष रहा, फलस्वरूप नारी टूटती बिखरती रही ॥ वह नयी टूटन नव आदर्शों और नवमूल्यों में टकराव का कारण भी बनी ॥

नयी परिस्थिति में अनेक आन्तरिक और बाहरी तनाव में रहते हुए भी भारतीय नारी की स्वतंन्त्रता सीमाओं में बँधी रही हैं। प्रमुख लेखिकाओं मानना है कि बदली हुई परिस्थितियों में नारी स्वतंत्र तो रहना चाहती है लेकिन सामाजिक सीमाएँ तोड़कर या समाज से कटकर नहीं। जब भी वह स्वतंत्रता का अर्थ सीमाएँ तोड़ना समझती है, उसे सिवा भटकन के कुछ नहीं मिलता।

हिन्दी की प्रतिनिधि लेखिकाओं ने नारी स्वतन्त्रता के बदलते स्वरूप से उपजे इन तनावों को बड़े ही सशक्त ढंग से अपनी रचनाओं में ढाला है ।

विशेष कर मन्नू भण्डारी की कहानी "नई नौकरी की नायिका रमा आर्थिक मजबूरियाँ न होते हुए भी अपनी तरह से जीने का समानाधिकार चाहती है। घर का काम भी उसे एक बोझ लगता है। उसे भी वह समानता के आधारपर बाँटना चाहती है।[१०]

आदर्शो और नवमूल्यो में टकराव मन्नू भण्डारी की बहुतसी कहानियाँ जैसे - "बंदे दराजों के साथ" "ऊँचाई", "अकेली" आदि में दिखायी देता हैं। ये कहानियाँ जहाँ नारी की शारीरिक पवित्रता को झुठलाती हैं वहाँ इनमे सामाजिक मूल्य भी टूटते नजर आते हैं। ममता कालिया की कहानियाँ "जाँच अभी जारी है" तथा "जिन्दगी सात घन्टे की" में भी नारी के उन तनावों की सशक्त अभिव्यक्ति है जो उसे पुरुष - प्रधान क्षेत्र में प्रवेश करने पर झेलने पड़ते है।[११]

उषा प्रियवंदा मल्लिका मोहिनी, शशीप्रभा शास्त्री और मृदुला गर्ग की कहानियोंमें भी इन तनावों की झलक स्पष्ट दिखायी देती है। घर और बाहर की दोहरी जिम्मेदारी के साथ - साथ कार्यशील महिलाओंको अपने व्यावसायिक क्षेत्र की समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। महिला कहानीकारों की कहानियोंमें ऐसी महिलाओं के तनाव विभिन्न स्तरोंपर दिखाई देते हैं। जैसे उषा प्रियवंदा की कहानी "जिन्दगी और गुलाब के फूल" में पुरुष का स्वामित्व समाप्त होने का तनाव है तो मृदुला गर्ग की कहानी "खरीदार में नारी की क्षमता का आकलन परम्परागत ढंग से होनेपर तनाव की स्थिति पैदा होती है। अनिता औलक की कहानी "फिर कहीं" में नारी के अविवाहित रहने का तनाव है। मन्नूजी की कहानी "जीती बाजी की हार" कामकाजी महिला का तनाव है।[१२]

इसीप्रकार नर - नारी सम्बन्धों में बदलाव, पर - पुरुष और प्रेमी, वैवाहिक सामंजस्य में यौन आदि विषयोंपर मन्नू भण्डारी ने सशक्त कहानियाँ दी हैं। वही तलाक तथा बाल समस्याओं को उषा प्रियंवदा तथा मृणाल पांडे आदि ने उजागर किया है। इस प्रकार नारी की समस्याको वैयक्तिक दृष्टिसे देखने के अलावा उसकी समस्याओं का सामाजिक - समस्या की दृष्टि से देखने का प्रयास हो रहा है।

उच्च मध्य और निम्न वर्ग की नारी समस्याओं को अपनी - अपनी दृष्टि से चित्रित किया जा रहा है। उच्च वर्ग की नारी में पाश्चात्यों का अन्धानुकरण, मध्यवर्ग की नारी में आर्थिक और मानसिक विवशता, निम्न वर्ग की नारी में अत्याधिक दरिद्रता और अनपढ़ होने के कारण रूढ़िबध्दता में पूरी तरह जकड़ी गयी और इससे सम्बन्धित समस्याओं का चित्रण किया जा रहा है ।

तात्पर्य यही है कि आधुनिक काल में चित्रित नारी सिर्फ पुरुष की जीवन - संगिनी ही नहीं, प्रतिद्वन्द्विनी भी है। वह आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो रही है । शिक्षा एवं आर्थिक स्वावलंबन ने उसे अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए सजग किया है। इसलिए उसे पग - पग पर टकराना पड़ता है जूझना पड़ता है और उसे अनेक ऐसे तनावों से गुजरना पड़ता है जो कल की नारियों के लिए अज्ञात थे।

**************-

* संदर्भ सूची *

१. डॉ. सु. गो. गोकाककर	- मार्क्सवाद और हिन्दी कहानी	- पृ. १३०
२. डॉ. सु. गो. गोकाककर	- मार्क्सवाद और हिन्दी कहानी	- पृ. १३१
३. डॉ. सु. गो. गोकाककर	- मार्क्सवाद और हिन्दी कहानी	- पृ. १३४
४. डॉ. सु. गो. गोकाककर	- मार्क्सवाद और हिन्दी कहानी	- पृ. १३६
५. अमृतराय	- मेरी प्रिय कहानियाँ	- पृ. १०१
६. महादेवी वर्मा	- श्रृंखला की कड़ियाँ	- पृ. १०० १०१
७. डॉ. सु. गो. गोकाककर	- मार्क्सवाद और हिन्दी कहानी	- पृ. १४२
८. डॉ कीर्ति केसर	- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का समाज सापेक्ष अध्ययन	- पृ. २३०
९. डॉ. सु. गो. गोकाककर	- मार्क्सवाद और हिन्दी कहानी	- पृ. १५४
१०. मन्नू भण्डारी	- एक प्लेट सैलाब	- पृ. ९
११. ममता कालिया	- जाँच अभी जारी है	- सारिका अंक [नवम्बर] १९८५
१२. रेणुका नैय्यर	- नारी : स्वातंत्र्य के बदलते रूप	- पृ. १३२